

प्रभु कामदेव सुन्दर स्वरूप, तुम हो अखण्ड चैतन्य रूप।
 नृप विश्वसेन के तुम हो लाल, निर्द्वन्द्व निराकुल तुम विशाल॥
 संसार भ्रमण से जग निराश, मनवांछित फल की करें आस।
 नित नई लालसायें मुनिन्द्र, जय शान्ति जिनेश्वर जय जिनेन्द्र॥
 शुभ-अशुभ राग हैं दुःखस्वरूप, जग ने माना आनन्द रूप।
 पर के तुम कर्ता नहीं नाथ, सबके ज्ञाता हो एक साथ॥
 प्रभु के स्वरूप को निरख आज, मिल गया मुझे सम्पूर्ण काज।
 हम तो शरणागत हैं मुनिन्द्र, जय शान्ति जिनेश्वर जय जिनेन्द्र॥
 मेरा स्वभाव है ज्ञानमयी, यह भेद जान हर्षित हैं सभी।
 रागादि विभाव किए जितने, आकुलित हुए सब ही उतने॥
 तुमरी महिमा तो है अपार, भवदधि से सबको करो पार।
 वातायन सुरभित है मुनिन्द्र, जय शान्ति जिनेश्वर जय जिनेन्द्र॥
 प्रभु चरणों में श्रद्धा अगाध, मेरी अन्तिम है यही साध।
 निरखत मुद्रा नयनाभिराम, कर जोड़ करत शत् शत् प्रणाम॥
 प्रमुदित है जनगण मन अपार, जिनबिम्ब विलोकत बार-बार।
 तुम 'अखिल' विश्व के हो मुनिन्द्र, जय शान्ति जिनेश्वर जयजिनेन्द्र॥

शान्तिदूत प्रभु जगत के, महिमा अपरम्पार।

मैं वन्दू नित भाव से, होय जगत उद्धार॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णाध्वं निर्वपामीति स्वाहा।
 (इति पुष्पांजलि क्षिपेत)

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये।

हाँ जी हाँ हम आये आये ॥टेक॥

देखे देव जगत के सारे, एक नहीं मन भाये।

पुण्य-उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये ॥1॥

जन्म-मरण नित करते-करते, काल अनन्त गमाये।

अब तो स्वामी जन्म-मरण का, दुखड़ा सहा न जाये ॥2॥

भव-सागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये।

तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये ॥3॥

अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये।

'पंकज' की प्रभु यही बीनती, चरण-शरण मिल जाये ॥4॥